पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

पूज्यपाद गुरुदेव का जन्म लगते असौज तीज सन् 1942 में ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद, जनपद गाजियाबाद (पहले मेरठ) उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री नानक चन्द और माता जी का नाम श्रीमती सोना देवी था। लगभग दो मास की अवस्था में श्वासन में लेटने से ही कुछ समय के उपरान्त शिशु की गर्दन दोनों ओर हिलने लगी और होठ फड़फड़ाने लगे। इस क्रिया की पुनरावृत्ति होने पर अज्ञानतावश उपचार प्रारम्भ हो गया। परन्तु उस विशेष अवस्था में जाने की घटनाएँ बढ़ती रहीं और आयु बढ़ने के साथ-साथ मन्त्र-पाठ और प्रवचन स्पष्ट सुनाई देने लगा। छः वर्ष की आयु में इन्हें भयानक चेचक निकली जो इनके मुख-मण्डल पर अपनी स्मृति छोड़ गई।

सात वर्ष की अल्पायु में ही इनके पिताश्री ने अपने गाँव में ही पशुओं व कृषि के कार्य के लिए नौकर रख दिया। धीरे-धीरे इनके प्रवचनों की क्रिया को मनोरंजन व कौतुक का साधन बनाया जाने लगा। एक दिवस प्रवचन की प्रक्रिया के पश्चात् अत्याधिक पिटाई के कारण लगभग 15 वर्ष की अवस्था में भीषण परिस्थितियों में मध्य रात्रि में गृह को त्यागकर विचरण करते हुए अपनी कर्मभूमि बरनावा जा पहुँचे वहाँ पर आप योग मुद्रा में समाधिस्थ होकर प्रवचन करने लगे, जिसकी सुगन्धी आस-पास में तीव्रता से फैल गई। आपने अपने प्रवचनों के माध्यम से वेद ब्रह्म पारायण यज्ञों का आयोजन करना शुरु कर दिया। जन-समूह के अथाह प्रेम व सहयोग से बरनावा लाक्षागृह पर पाँच यज्ञशालाएँ, महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, आश्रम व गऊशाला की स्थापना की, जिसका प्रबन्ध उनके द्वारा स्थापित श्री गाँधी धाम समिति की देखरेख में होता है।

पूज्यपाद गुरुदेव 28 दिसम्बर 1961 में पहली बार दिल्ली प्रवचन के लिए आए। अथाह ज्ञान के भण्डार, आध्यात्मिक जगत की महान् व अद्‌भुत विभूति के प्रवचन सुनने के पश्चात् प्रवचनों को टेप करने का निर्णय लिया गया और कुछ समय के उपरान्त प्रवचनों को टेप करके प्रकाशित करने के लिए पूज्यपाद गुरुदेव की संरक्षकता में वैदिक अनुसन्धान समिति का दिल्ली में गठन हो गया। जन्म जन्मान्तरों के शृङ्गी ऋषि की पुण्य आत्मा ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज इस अज्ञानता के युग में वैदिक संस्कृति का पुनः से उत्थान करने के लिए जीवनपर्यन्त लगे रहे। ऋषि-मुनियों ने अनुसन्धान के द्वारा भौतिक व आध्यात्मिक विज्ञान को अपने जीवन में कितना साकार किया है उसकी अथाह चरमसीमा इनके प्रवचनों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। इस अथाह ज्ञान को मानवता के लिए आचरण व व्यवहार में लाने का सरल व श्रेष्ठ मार्ग प्रदर्शित किया है और साहित्य की गुत्थियाँ स्पष्ट की हैं। जिससे मानव अपना व जनसाधारण का कल्याण करते हुए इस भव सागर से पार हो सकता है।

यह दिव्य आत्मा 15 अक्टूबर 1992 को पचास वर्ष की अवस्था में ब्रह्ममूहुर्त के समय अपने लोकों को गमन कर गई। **–वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रातःकाल की अग्नि! तू हवि है : तू हव्य पदार्थों को उत्पन्न करने वाली है। तू हमें हव्य पदार्थों का पान करा, जिससे हम देवता बन जाएँ और देवतागणों के समाज में विराजमान होकर देववाणियों को विचारें। हमारी हर स्थान में देवप्रवृत्ति ही बनी रहे। हे परमात्मन्! तू कल्याण करने वाला है, हमारे कल्याण के लिए तूने नाना सामग्री उत्पन्न की है। हे प्रभु! हम आपसे कल्याण चाहते हैं।

हे इन्द्र! इस संसार को नियम से बनाने वाले! हमारे जीवन को भी नियमित बना। जब हमारा जीवन नियमित होगा, तो हम कुछ कार्य कर सकेंगे। आपने प्रातःकाल में सूर्य को उत्पन्न किया है। इसी प्रकार हे देव! हम उस महान् ज्योति को चाहते हैं जिससे हमारा आत्मिक-कल्याण हो। वह कौन-सी ज्योति है?

वह ज्योति हमारी सन्ध्या की व्याहृतियाँ हैं। जब सन्ध्या की व्याहृतियों को जाना जाता है तो वह सन्ध्या वास्तव में हमारा कल्याण करा देती है। जब देवता सन्ध्या के द्वार पर जाते हैं तो सन्ध्या पुकार कर कहती है कि तुम यदि मेरा आदर करोगे, अनुकरण करोगे, तो संसार में देवता बन जाओंगे। यदि तुम मुझे ठुकराओगे तो तुम संसार में ठुकराए जाओंगे।

अतः सन्ध्या के अनुकरण से मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ बन जाता है और जिस मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ बन गया, उसका वास्तव में कल्याण हो गया।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 591 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 666
वर्ष : 50 44 समग्र वर्ष : 57

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. ऋषि-मुनियों का अनुष्ठान	पूज्यपाद-गुरुदेव एवम् पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी	5-18
4. त्रिविद्या	पूज्यपाद-गुरुदेव	19-37
5. ऋषियों के उद्गार		38
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		39-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गुणगान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि वेबसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

ऋषि-मुनियों का अनुष्ठान

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना प्रभु का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय माने गये हैं। और जो भी मानव उसका वरण कर लेता है, अथवा उसे वर लेता है, वो प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। इसलिये जो मानव उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बना करके, मानो उसकी आभा में रत्त होकर के गति करता है, मानो उसकी आभा में निहित हो जाता है। परमपिता परमात्मा एक महान् हैं, मानो वो यज्ञमयी स्वरूप माने गये हैं। याग को उस महादेव का एक आयतन माना गया है, उसका गृह है, उसका सदन है मानो वह उसी में व्याप्त रहता है। आज हम उस परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है, वो कितना महान् है। वह संसाररूपी यज्ञशाला का निर्माणवेत्ता है अथवा निर्माण करने वाला है। जो निर्माणवेत्ता होता है, वही तो महान् कहलाया जाता है, इसलिये आज हम उस परमपिता परमात्मा की महती का अथवा उसके महान् ज्ञान और विज्ञानमयी स्वरूप का प्रायः वर्णन करते रहते हैं। क्योंकि हमारा वेद मन्त्र नाना प्रकार के रूपों में रत्त रहने वाला है। नाना प्रकार की विवेचना करने वाला है।

प्रेरणा

आज मुझे कहीं से ये प्रेरणा प्राप्त हो रही है कि याग के सम्बन्ध में कुछ चर्चायें की जायें। तो मुनिवरो! हमने यागों के सम्बन्ध में बहुत से

वाक्य प्रगट किये हैं। क्योंकि याग हमारे यहाँ सर्वत्रत्व माना गया है। संसार का जितना भी सुकर्म है, जिस कर्म में आत्मीयता है, मानवता है, मानवीय दर्शन है और यौगिकवाद है वह सर्वत्र मानो एक प्रकार के यागों से वह कटिबद्ध रहता है क्योंकि हमारे ऋषि-मुनियों ने इस संसार के ऊपर बड़ा अनुसन्धान किया है। अनोखे-अनोखे उन्होंने अपने विचार दिये हैं। परन्तु ये सिद्ध हुआ है उन विचारों से कि ये जो परमपिता परमात्मा का जो ये संसार है, ये एक प्रकार की यज्ञशाला है और प्रत्येक मानव को याग से उन्होंने कटिबद्ध किया है। क्योंकि सुगन्ध से मानव के जीवन का समन्वय होता है अथवा उस मानवीय जीवन से उन्होंने बेटा! देखो, याग को उसमें परणित किया है और निकट लाने का प्रयास किया। हमारे यहाँ बेटा! कोई भी क्रियाकलाप हो, चाहे वो विज्ञान की आभा में हो, चाहे वो आध्यात्मिकवादी हो, परन्तु वह सब एक याग से कटिबद्ध रहते हैं।

उद्दालक गोत्रीय ऋषि का अनुष्ठान

मुझे एक वाक्य स्मरण आ रहा है, बहुत पुरातन काल का वाक्य है बेटा! मानो कुछ उद्दालक गोत्रीय ऋषि अपने में अनुष्ठान कर रहे थे। मानो देखो, भयङ्कर वनों में विराजमान हो करके, अपने गृह से ये सङ्कल्प ले करके आये कि हम अनुष्ठान करेंगे। परन्तु बेटा! अनुष्ठान कहते किसे हैं? **अनुष्ठान कहते हैं जो मानव अपनी प्रत्येक इन्द्रियों को याग में पिरोना चाहता है।** प्रत्येक इन्द्रिय को याग, यज्ञशाला के पात्रों में निहित होना चाहता है। हमारे यहाँ यज्ञशाला के उस पात्रों की आभा में मानव सदैव निहित रहा है। **यज्ञशाला के दस पात्र होते हैं।** परन्तु उन पात्रों में बेटा! उन पात्रों में जो भी कुछ विद्यमान है, उसको एकोकीकरण करके, उसका साकल्य बना करके और उसमें याग करना चाहता है। तो इसलिये बेटा! देखो, ऋषि-मुनियों में एक विचार आया कि हम अनुष्ठान करना चाहते हैं और अनुष्ठान में, याग में अपने को ले जाना चाहते हैं। तो बेटा! कुछ ऐसा स्मरण है क्या वे ऋषिवर भयङ्कर वनों में जा करके बेटा! उन्होंने

कुछ साकल्य एकत्रित किया और साकल्य एकत्रित करके कामधेनु के गौ घृत के द्वारा वे जब याग करने लगे, तो उन्हें बेटा! छः माह हो गया था अनुष्ठान करते हुये, याग में परणित होते हुये, तो उनके विचारों में एक महानता का दर्शन होने लगा था। कही से बेटा! भ्रमण करते हुये सोम व्रेतकेतु भ्रमण करते हुये आ गये। और वे मानो देखो, विद्यालय में से कुछ ब्रह्मचारियों से विवादयुक्त हो करके वे विद्यालय को त्याग करके आये। मानो उनके हृदय में उदण्डता, उनके हृदय में नाना प्रकार की विड़म्बना सेज रही थी। तो मेरे पुत्रो! देखो, जब वे ऋषि के द्वारा जब वो याग कर रहे थे तो वो भी याग करने लगे। जब याग करने लगे तो ऋषि ने अपने योगाभ्यास, अनुष्ठान की प्रतिक्रियाओं से प्राण को मिलन करके बेटा! उनके अन्तर्हृदय को वो दृष्टिपात करने लगे। क्योंकि अग्नि का स्वरूप बेटा! परिवर्तित हो जाता है, **अग्नि के स्वरूप में जितना सात्विक प्राणी विराजमान हो करके वो याग करता है, अग्नि का स्वरूप कुछ और होता है।** और जिस समय वो चिन्तित हो करके, विड़म्बना में नियुक्त हो करके बेटा! याग करता है, अग्नि का स्वरूप कुछ और बन जाता है। तो ये तो बेटा! विज्ञान के वाङ्मय में, इस आभा में तो तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल ये कि मानो देखो, अग्नि के स्वरूप को जब ऋषि ने दृष्टिपात किया तो उन्होंने ऋषि से कहा, हे ऋषिवर! आप जो याग में आ गये हैं, ये वायुमण्डल मानो देखो, तुम्हारे विचारों से दूषित होने जा रहा है। तुम्हारे विचारों में विड़म्बना है, उदण्डता है, उस उदण्डता के कारण तुम्हारा मन और हृदय, दोनों शुद्ध नहीं है। इसलिये तुम्हें याग करने का अधिकार नहीं है।

मेरे प्यारे! जब ऋषि ने ये वाक्य कहा, उद्दालक गोत्रीय ऋषि ने, तो वो ऋषि मौन हो गये और चरणों की वन्दना की, कि प्रभु! आज वास्तव में मेरा हृदय चिन्तित है। मेरा आज अन्तर्हृदय मानो विद्यालय से मैं विराज रहा हूँ, और विद्यालय में ब्रह्मचारियों का, मेरा विवाद आ गया, उस विवाद में मेरी प्रवृत्ति मानो तमोगुणी बन गयी है और रजोगुणी बन गयी है। वह रजोगुणी

प्रवृत्ति मेरे हृदय में छाई हुयी है। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने कहा जाओ, भयङ्कर वन में जा करके अनुष्ठान करो। पत्र-पुष्पों का पान करो, तुम्हारा हृदय पवित्र बन जायेगा। **याग के विचारों को अपने में धारण करते रहो।** तब मुनिवरो! देखो, वह ऋषि आश्चर्य में बोले कि प्रभु! धन्य है।

उन्होंने बेटा! पाँच वर्ष का अभ्यास इस प्रकार का, नित्यादि का काम करके तो वह अपने हृदय में जो नाना प्रकार की विड़म्बना थी उससे वो रहित हो गये। उससे रहित हो गये तो उद्दालक गोत्र के बेटा! अपने में कितने अद्वितीय रहे हैं, और वे **प्रातःकालीन याग करना, अपने विचारों के ऊपर चिन्तन करना।** बेटा! वह नाना वृक्षों के मानो देखो, पत्र-पुष्पों को अग्नि में तपा करके, बेटा! उनका वो पान करते रहे। बारह-बारह वर्षों का इस प्रकार अनुष्ठान करने से उनका अन्तरात्मा पवित्र हो गया। अन्तरात्मा में पवित्रता आ गयी, वही पवित्रता मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ एक महान् बन करके रहती है।

याग का स्वरूप

विचार-विनिमय क्या हमारा जो यागाम् आचार्यों ने ये माना है, आचार्यों ने क्या ऋषि-मुनियों ने ये अपना वक्तव्य दिया वेद के माध्यम से, क्या प्रत्येक मानव को याग के निकट आ जाना चाहिये, याज्ञिक बनना चाहिये। जैसा मैंने पुरातन काल में तुम्हें निर्णय दिया, क्या मेरी पुत्रियों का भी याग के निकट आ जाना बहुत अनिवार्य है। मानो सन्तान को जन्म देना भी मेरी पुत्रियों का वह याग है। वो याग कर रही हैं, यदि उनका विशुद्ध हृदय है, उस हृदय से मानो अपने गर्भ की पालना करती हैं, तो मानो देखो, वह उनका याग है क्योंकि पुत्रों, सन्तान को जन्म देना भी, उन्हें उचित विचार देना भी मेरे पुत्रो! देखो, एक याग है। हमारे यहाँ याग की परिभाषा बड़ी विचित्र मानी गयी है। आचार्य कुल में आह! ब्रह्मचारी जब आचार्य के चरणों को स्पर्श करके और वह अपनी विद्या का अध्ययन करता है, आचार्य उसे गौमेध याग करा रहा है और गौमेध याग करा करके कहता है ब्रह्मचारी

तू गौमेध याग कर, तू अपनी मानो देखो, अपनी इन्द्रियों को पवित्र बना, तो वह तेरा गौमेध याग हो जायेगा। तो परिणाम क्या है, मेरे पुत्रो! देखो, ये संसार एक यज्ञशाला में विराजमान है, याग कर रहा है, वो किसी भी रूप में विद्यमान हो, या अपने अन्तःकरण में मानो सात्विक वायुमण्डल, सात्विक वातावरण को बनाता वो याग कर रहा है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ। विचार ये कि ये प्रेरणा मुझे कहीं से प्राप्त हुई है क्या मैं याग के सम्बन्ध में – मानो देखो, यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है, वो याग कर रहा है, अपनी देवी से कहता है, देवी आओ हम याग करें, हम देवताओं को हवि प्रदान करना चाहते हैं। **याग का अभिप्राय है देवताओं को हवि देना।** हवि देना है, दोनों प्रकार के लोकों से हमें हवि प्रदान करना है। **हवि किसे कहते हैं, अपने विचार और साकल्य द्रव्य को अग्नि के मुख में परणित करना है और अग्नि उसका विभाजन कर देती है।** अग्नि बेटा! वही अग्नि समुद्रों में, वही अग्नि मानो देखो द्यौ में, वही अग्नि मानव के हृदय में, वही अग्नि मानव की वाणी में, वही अग्नि बेटा! देखो, पृथ्वी के गर्भ में और वही अग्नि देखो, कहीं-कहीं शीतल बन करके अपने में चन्द्रमा के रूपों में भी रत्त रहने वाली है। तो मानो बेटा! अग्नि की विवेचना तो हम देना नहीं चाहते हैं। विचार केवल ये कि **अग्नि पदार्थों का विभाजन कर देती है, वह विभक्त हो करके मानो वायुमण्डल को पवित्र बना देती है। मानव के अन्तर्हृदय में वे परमाणु जाते हैं, तो वे उसे सुगन्धित बना देती है।** प्रत्येक मानव बेटा! ये याग में उद्गाता उद्गीत गा रहा है, देवताओं का उद्गीत गाता हुआ कहता है ''देवत्वं अध्यं रुद्रम् ब्रह्मा लोकम् व्रथाः''। मानो देखो, इस आभा में ले करके, ये अपने में कहता है कि ये एक रथ है और रथ पर विद्यमान हो करके मेरे प्यारे! देखो, द्यौलोक में प्रवेश होता है। तो इसलिये आज हम, मानो याग के सम्बन्ध में मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

ओ३म् दधिया रथम् वाचन्नमाः।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भ्रद ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कई समय से अपना उद्‌गीत गा रहे हैं, परन्तु उनके उद्‌गीतों से मुझे ये प्रतीत होता है, क्या इनके विचारों से ये प्रतीत हुआ है, क्या ये राष्ट्रवाद और मानव समाज इतना ऊँचा रहना चाहिये। बुद्धिजीवियों की व्याख्या करते हुये पूज्यपाद गुरुदेव ने अपना एक ऐसा मत, ऐसा विचार, ऐसा हमें एक मार्ग दर्शाया है जिस मार्ग में एक विचित्रता हमें प्रतीत होती है। परन्तु आज का जो हमारा ये वाक्य प्रारम्भ हो रहा है, हमारी जो ये वाणी है, ये जो हम उद्‌गीत गा रहे हैं, ये मृत-मण्डल में जा रहे हैं, ये पृथ्वी मण्डल तक जा रही है। वहाँ मेरा अन्तरात्मा प्रसन्न हो रहा है, एक याग की मैं पूर्णता को ग्रहण कर रहा था। और अपने में ये अनुभव कर रहा था, क्या मैं यज्ञशाला में विद्यमान हूँ और ये प्रिय याग हो रहा है। मेरा तो अन्तरात्मा सदैव यजमान के साथ रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे क्योंकि सौभाग्य की चर्चा करते हुये वैदिक आचार्यजनों ने ये कहा है, **सौभाग्य उसे कहते हैं जहाँ मानव के हृदय में सदैव एक महानता का प्रवाह गति करता रहे, और गृह में एक-दूसरे की सम्मति रहे। एक-दूसरे से मानव प्रसन्न रहे।** वह जो गृह है, वह सौभाग्यशाली कहलाता है। और जिन गृहों में कलह रहता है, विड़म्बना रहती है, हिंसक विचार रहते हैं, वो गृह नार्किक कहलाता है। तो आज का हमारा विचार केवल ये है, क्या हे यजमान! मेरा अन्तरात्मा सदैव यजमान के साथ रहता है क्या तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तू देवत्व क्रियायें करता रहे। मानो तू ब्राह्मणामाह पुरुषों की वार्त्ता को तू श्रवण करता रहे, जिससे तेरे जीवन में विड़म्बना न आये और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे।

द्रव्य

द्रव्य का सदुपयोग होना बहुत अनिवार्य है। ये जो द्रव्य है, इसके भिन्न-भिन्न रूप हैं। ये द्रव्य मानव को द्रव्यपति बना देता है, ये ही द्रव्य माता के रूप में रहता है। मानो देखो, जैसे बालक माता की आज्ञा का पालन करता है, तो माता उसे सर्वत्र प्रदान कर देती है, उसे सर्वत्रता दे देती है। इसी प्रकार, इसी प्रकार जब 'यज्ञं ब्रह्मा' देखो, जब द्रव्य का, ममतामयी इस माँ का सदुपयोग होता है तो माता सर्वत्र प्रदान करके – इसी प्रकार जो प्राणी द्रव्यों का सदुपयोग करते हैं, मानो देखो, **जब यजमान अपने द्रव्य का सदुपयोग करता है तो देवपुरी को उसके परमाणु बन करके जाते हैं। विचारों का साकल्य के साथ देव लोक में जाते हैं।** वही मानो देखो, द्रव्य की वृद्धि का मूल कारण बन करके यजमान के गृह को ऊँचा बना देता है।

परिणाम क्या – मानो देखो, ये 'यागं ब्रह्मा', ये याग ब्रह्मा है, ये याग विष्णु है, ये याग रुद्र है, यही याग मानो देखो, अग्निष्टोम माना गया है। हम यागों में परणित हो गये हैं। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को परिचय देता रहता हूँ। मानो यागों से आत्म हुआ है, ये सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के मानो देखो, ऋषि-मुनि अपने में यागों का चलन करते रहे हैं, यागों की मीमांसा करते रहे हैं।

यागों पर आक्रमण का रहस्य

परन्तु देखो, दुर्भाग्य इस समाज का, जो बाह्य जगत का दुर्भाग्य मानो तो पूरे सृष्टि मण्डल का, लोक-लोकान्तरों का – जब देखो, रूढ़िवादी प्राणी आये, उन्होंने यागों के ऊपर आक्रमण किया, आक्रमण क्यों किया? क्योंकि याग की मीमांसा में परिवर्तिता आ गयी और याग में देखो मांस की आहुति देना, याग में, गौमेध याग में गौ की आहुति देना, अजामेध में अजा की आहुति देना, इसी प्रकार देखो, अश्वमेध में घोड़े के मांस की आहुति देना, यहाँ वाजपेयी यागों में बैल की बलि का वर्णन आना, ये सब देखो, उसके अर्थों का अनर्थ करके देखो, याग में उनकी आहुति देना याग पे विशाल

आक्रमण हो गया। उस याग के विशाल आक्रमण होने का परिणाम ये हुआ कि याग के ऊपर आक्रमण हुआ, तो देखो जैसा मैंने इससे पूर्व काल में पूज्यपाद गुरुदेव को निर्णय कराया, आज का मानव देखो, उसी याग के सबसे प्रथम मांस प्रसाद के रूप में आया, और अब मानव की जीविका के रूप में आ गया। देखो, इतना परिवर्तन हो गया। इसलिये मैं विचार ये दे रहा हूँ, क्या ये यागों का शुद्धिकरण होना चाहिये। यागों का शुद्धिकरण तो हो रहा है समय-समय, परन्तु व्यापिक रूप से होना चाहिये।

राजा को प्रेरणा

राजा के यहाँ याज्ञिक पुरुषों को विज्ञान की वार्त्ता दे करके और राजा से कहें, हे राजन्! तेरे गृह में याग होना चाहिये और तेरे गृह में जब याग का शुद्धिकरण होगा, तो तेरे राष्ट्र में ये घोषणा हो जायेगी क्या तू हे राजन्! 'याज्ञिक ब्रह्मा' क्या प्रत्येक गृह में याग होना चाहिये। जैसे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ऋषि-मुनियों की चर्चायें, महाराजा अश्वपति के राष्ट्र की चर्चा भी कर रहे थे। वैज्ञानिकों से कहो, हे वैज्ञानिको! तुम मानो अपने विज्ञानशाला में भी याग करना प्रारम्भ करो जिससे तुम्हारा विज्ञान सार्थक बनेगा। विज्ञान में एक महानता आयेगी। मानो देखो, यह वाक्य केवल राजा को प्रदान करके अपनी आभा में नियुक्त रहना चाहिये। तो विचार क्या है देखो, जब प्राणी अपने में दूषितपना करता है तो नष्ट हो जाता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने बहुत ऊँचा एक वाक्य कल के वाक्यों में कहा था। ऋषि अपना वक्तव्य दे रहे थे, मानो देखो, तुम ब्रह्मचारी कवन्धि का एक वक्तव्य इस प्रकार का आया, क्या देखो, राष्ट्रवाद में, राष्ट्रवाद में जब स्वार्थपरता आ जाती है तो राष्ट्र की प्रणाली समाप्त हो जाती है। मानो देखो, राजा के राष्ट्र में 'निष्वक्तम् ब्रह्मा' मानो देखो, चुनौती प्रदान करने वाले ऋषि-मुनि होते हैं राजा के, तो वो राष्ट्र पवित्रता की वेदी पर होता है। मानो देखो, मैंने तो ये पूज्यपाद गुरुदेव को कई बार में प्रगट कराया। आज इस मानव भूमि पर ये हमारी आकाशवाणी जा रही है राष्ट्र बड़ा चिन्तित हो रहा है, समाज चिन्तित

हो रहा है, रक्त भरी क्रान्ति के प्रवाह मानो वह उत्पन्न हो रहे हैं। रक्त बहाया जा रहा है, केवल कहाँ, एक रूढ़िवाद की वेदी पर। एक रूढ़िवाद बन गया है, यहाँ रूढ़िवाद क्या है, नाना प्रकार के धर्म के नामों पर, ईश्वर के नामों पर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ हैं, और सब रूढ़ि ये कहती हैं, क्या हम ब्रह्म हैं, रूढ़ि कहती हैं हम वाम गुरु हैं, परन्तु देखो, रूढ़ियाँ जब ये कहती हैं इसके पश्चात् भी रक्त बहाया जा रहा है, उसके पश्चात् भी रक्त का प्रवाह चल रहा है। अरे! जब भोले प्राणियों तुम सब ब्रह्म हो, तुम सब गुरु और आचार्य हो तो ये मानो एक-दूसरे में विड़म्बना कैसी उत्पन्न हो गयी है? ये कैसी विड़म्बना आ गयी है, इसमें केवल स्वार्थवाद निहित है और क्या है? तुम ब्रह्म नहीं हो, ब्रह्म तो वैसे ही उच्चारण कर रहे हो। तुम गुरु नहीं हो, गुरु तो वैसे ही उच्चारण कर रहे हो। परन्तु तुम्हारे हृदय में एक द्रव्य की आह लगी हुई है। उस द्रव्य की आह से, तुम्हारे में स्वार्थपरता है और पूर्वजों के नामों को तुम दूषित कर रहे हो। मानो देखो, जब ये वाक्य मैं कहता हूँ, तो मुझे प्रायः ऐसा दृष्टिपात आता है, वैदिक साहित्य पर विचार न होने से, वैदिक साहित्य पर अपनी मानवीयता की आभा नियुक्त न होने से मानो मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है पूज्यपाद, क्या ये सब स्वार्थवाद है। आज का राष्ट्रवेत्ता, आज का जो आधुनिक काल का जो राजा है, वो प्रजा को सुगठित करना नहीं चाहता है, वह रक्त को बहाने में प्रसन्नता अपने में अनुभव कर रहा है। और क्यों कर रहा है, क्योंकि उसकी राष्ट्रीयता बनी रहे। परन्तु देखो, जब संसार की और मानवीयता की दृष्टि से ये नहीं पान कर रहा है कि जिस राजा के राष्ट्र में चिन्ता हो जायेगी, रक्त बहाना प्रारम्भ हो जायेगा, एक समय वो आयेगा कि राजा का रक्त भी मानो देखो, नदी के प्रवाह में गति करने लगेगा। मानो देखो, इस प्रकार **ये मानवीय विचार है, जैसा तुम अपने में चाहते हो वैसा तुम्हारे लिये होना है।** यदि तुम दर्शनों का अध्ययन करते हो, तो तुम दार्शनिक बन जाओंगे, तुम विड़म्बना में रहना चाहते हो, विड़म्बित हो जाओंगे। परन्तु देखो, हे राजन्! यदि तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है, तो मैंने बहुत पुरातन काल में यहाँ कहीं नानक

के मानने वाले हैं, कहीं मोहम्मद के मानने वाले हैं, कहीं ईशा के मानने वाले हैं, कई नाना प्रकार की और योनियाँ हैं, जो नाना प्रकार के याग के ऊपर आक्रमण कर रहे हैं। अपने पूर्वजों के ऊपर आक्रमण हो रहा है।

मानो मेरे विचार में ये नहीं आ रहा है, क्या हे राजन्! तू इसका निराकरण क्यों नहीं करना चाहता है? इसका निराकरण इसलिये कि तेरा यह स्थली बनी रहे। ये वाक्य मुझे प्रिय नहीं लग रहा है, ये मानवीय दृष्टि से भी, आभा की दृष्टि से भी महान् नहीं कहलाया जा रहा है। क्योंकि ये मैंने कई काल में वर्णन करते हुये कहा है क्या जब भी अपने गृह में सुगन्ध की और वेदों की ध्वनि आनी प्रारम्भ हो जायेगी तो सत्य है, जिसमें मानव दर्शन है, जिसमें मानो सार्थकता है, जिसमें यौगिकता है, जिसमें विज्ञानता है, जब भी तू उसको अपनाना प्रारम्भ करेगा तो मानो तेरा राष्ट्र पवित्र बनेगा। 'अहिंसा परमोधर्मी' तेरा राष्ट्र बनेगा, परन्तु देखो, जब मैं ये कहता हूँ, तो ये कहते हैं कि ये संस्कृति तो वृद्ध हो गयी है। मानव कहता है आधुनिक काल का, क्या ये संस्कृति तो वृद्ध हो गयी है। अरे! भोले प्राणी, वृद्ध संस्कृति नहीं हुई है, मानो देखो, वृद्ध तो तुम्हारे में ये विचार हैं, उनमें वृद्धपन आ गया है और उनमें ऐसा वृद्धपन आया है, क्या तुम अपने को ऊर्ध्वा में ले जाना नहीं चाहते। **संस्कृति अपने में संस्कृति रहेगी, ये अद्वितीय है, वेद मन्त्र इसके लिए वाणी है, ये अपनी स्थलियों पर रहेगा।** परन्तु देखो, इसे तुम अपना निराकरण कर सकते हो तो उनके लिये वही वैदिकता रहेगी संसार में। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मैं आपको निर्णय आधुनिक काल के राजाओं के प्रजाओं से कहता हूँ हे प्रजाओ! जाओ राजा को यदि निराकरण करना है, राजा चाहता है कि मेरे राष्ट्र में धर्म के नामों पर रूढ़िवाद न बने और रूढ़िवादों के ऊपर आक्रमण न हो करके रक्त भरी क्रान्ति न आये, तो ये उसका निराकरण मैं उच्चारण करता रहता हूँ। मैं कहता हूँ, हे राजन्! तू जितने भी नाना प्रकार के सम्पदाय हैं, नाना प्रकार के रूढ़िवादी हैं, उन रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित कर, और रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित करके अपने को वेदों का अध्ययन करना होगा और

तुझे ब्रह्मवेत्ता बनना होगा, और मानो देखो, आचार्यों के समीप विद्यमान हो करके उनका शास्त्रार्थ होना चाहिये। उनका चिन्तन होना चाहिये, और गम्भीर चिन्तन होते हुये संस्कृति को, उस मानवीयता को अपनाने का राजा तू प्रयत्न कर जिसमें विज्ञान हो, जिसमें सार्थकता हो, जिसमें मानो देखो, मानवीय दर्शन हो उसी को तू अपनाने का प्रयास कर, वही मानो देखो धर्म है और उस धर्म को अपना करके उसे तुझे रक्षा करनी है और मानव को उसी वेदी पर लाना है, जिससे तेरे राष्ट्र में ईश्वर के नाम पर रक्त भरी क्रान्ति ना आ जाये। मानो देखो, ये उसका निराकरण है, परन्तु राजा नहीं चाहता। नानक के मानने वाले हैं, मानो देखो, रक्त भरी क्रान्ति लाते हैं, मोहम्मद के मानने वाले रक्त भरी क्रान्ति में लगे हुये हैं, परिणाम क्या, उसकी और भी नाना प्रकार की जो रूढ़िवाद हैं मानो देखो, कोई गुरु बन रहा है, कोई कानाबती कह रहा है, मानो देखो, नाना प्रकार की ईश्वर के नाम पर एक मानो देखो, रक्त भरी क्रान्ति का प्रवाह गति कर रहा है। जब मैं ये विचारता हूँ कि ये क्या हो रहा है प्रभु के राष्ट्र में, तो मैं यही कहता हूँ कि ये समाज, राजा याज्ञिक नहीं है। राजा जब प्रातःकाल में मानो देखो, नाना प्राणियों के बाल्यों को अग्नि में तपा करके मानो उनका रस ग्रहण करता है, जब वह रस ग्रहण करता है, जब आसन को त्यागता है, तो कैसे 'अहिंसा परमोधर्म' आ सकता है। कैसे वो याग को अपना सकता है, परन्तु **याग को वो प्राणी अपनाते हैं जो सात्विक प्राणी होते हैं।** जो प्रभु का चिन्तन करने वाले और राष्ट्र को प्रभु के आश्रित त्याग करके केवल अपने कर्त्तव्य का पालन करते हैं, तो जब ही तो राष्ट्र ऊँचा बनता है। परन्तु देखो, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये वाक्य पुरातन काल में भी प्रकट किया है, आज भी मैं उन्हीं वाक्यों की पुनरुक्ति कर रहा हूँ, परन्तु देखो, आज क्या मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने बुद्धिजीवी प्राणियों की कितनी विवेचना की है।

आधुनिक काल का बुद्धिजीवी प्राणी

आधुनिक काल का बुद्धिजीवी प्राणी वह है – जो वर्तमान का काल

है मैं उसकी चर्चा कर रहा हूँ – बुद्धिजीवी प्राणी वह है जो दूसरों के शृङ्गार को, दूसरों के द्रव्यों को अपने द्वारा एकत्रित करके अपने मानो देखो, गृहों को ऊँचा सजातीय बनता है, उसमें और उसमें देखो, ऐश्वर्य में परणित हो करके और वे उसमें देखो सदन बना करके और स्वयं चिन्तित रहता है और वैभव को अपने में संग्रह करने वाला है वह आधुनिक काल में बुद्धिजीवी प्राणी कहलाता है। परन्तु देखो, ये तो बुद्धिहीन होते हैं। मानो इनको तो मैं बुद्धिहीन कहा करता हूँ। पूज्यपाद गुरुदेव तो ये कहते रहते हैं, क्या ये कटु उच्चारण कर रहा है परन्तु मैं बुद्धिहीन प्राणियों की – बुद्धिजीवी प्राणी वो होते हैं जो स्वयं मानो सूक्ष्म सदन में रहते हैं, प्रजा की उन्नति को दृष्टिपात करके प्रसन्न रहते हैं, कर्त्तव्य का पालन करते हैं, प्रभु के यौगिकवाद में रमण करते हैं वो बुद्धिजीवी प्राणी होते हैं, जैसा पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन किया है। और जो राष्ट्रीयवेत्ता राष्ट्रीय आभा को मानो देखो, धृष्टता दे रहे हैं, वे ही देखो बुद्धिजीवी प्राणी होते हैं। वे मानो अवसरों के बोधि होते हैं, और जो अवसरों के बोधि होते हैं वे हर कर्त्तव्य का पालन नहीं करते, वे मानो अन्धकार में चले जा रहे हैं। परिणाम क्या है मानो देखो, उन्हें अन्धकार में प्रकाश प्राप्त नहीं होता है, वह अन्धकार में रहते हैं। इसलिये **अन्धकार को त्यागना, प्रकाश को लाना, यही मुनिवरो! देखो, यही हमारे आचार्यों ने बुद्धिजीवी प्राणियों का लक्षण किया है, मानो वर्णन किया है।**

आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, केवल वाक्य ये प्रगट कर रहा हूँ, क्या मानव को अपने मानवीय दर्शन पर आ जाना चाहिये और राष्ट्र को ऊँचा बनाने वाला देखो राजा नहीं है। राष्ट्र को ऊँचा राजा नहीं बनाना चाहता है क्योंकि वो पद की लोलुपता के कारण जितने राष्ट्रीयवेत्ता हैं वो कोई यह नहीं चाहता कि राष्ट्र पवित्र बन जाये। **परन्तु देखो, कुछ समय आ रहा है, क्या जो ये नहीं चाहते कि राष्ट्र पवित्र न रहे, उनकी ही मृत्यु होने वाली है। मानो वही रसातल को चले जायेंगे,** ऐसा मानो देखो, मेरा सदैव विचार कहता रहता है। विचार क्या है, जब मैं इन विचारों को पूज्यपाद गुरुदेव को प्रगट कराता हूँ, क्या रक्षतम् उनकी मृत्यु तो

इसलिये कि उनका आत्मा, **आत्मा का जो चिन्तन है वो समाप्त हो गया है। आत्मबल समाप्त जब हो जाता है तो मानव की मृत्यु हो जाती है।**

विज्ञान अपने में सार्थक बन रहा है। मैं ये कहता रहता है कि पुरातन काल के विज्ञान के आधार पर आज का विज्ञान इकाई में रमण कर रहा है। वो इकाई में है क्योंकि पुरातन काल का जो विज्ञान है वो द्युलोकों में, लोक-लोकान्तरों में भ्रमण करके पुनः अपने – जैसा पूज्यपाद गुरुदेव प्रगट करा रहे थे। परन्तु देखो, आधुनिक काल का जो विज्ञान है, यन्त्रों का निर्माण हो रहा है, अग्नेय अस्त्रों का निर्माण हो रहा है परन्तु जलास्त्रों का निर्माण नहीं हो रहा है। **मृत्यु के लिये विज्ञान है, जीवन के लिए विज्ञान नहीं रहा इसलिये विज्ञान अपने में मानो देखो, इकाई में रत्त हो रहा है।** मैं विज्ञान की चर्चा नहीं देने आया हूँ, विचार केवल ये कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी यागों की चर्चा कर रहे थे। **पूज्यपाद गुरुदेव ने एक ही वाक्य कहा है, क्या संसार में जितने भी राजा अपने-अपने राष्ट्र में ये घोषणा कर दें क्या मेरे गृह में याग होगा और प्रजा के यहाँ भी याग होगा, प्रत्येक गृह में वेद ध्वनि आती रहे,** तो कुरीति समाप्त हो जायेंगी, महानता का दर्शन होने लगेगा, प्रजा में शान्ति की स्थापना हो सकती है, अन्यथा नहीं हो सकेगी। तो विचार ये कि अपने विचारों को शोधन करना। आज मैं विशेष चर्चा नहीं देने आया हूँ, अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा। आज्ञा पाने से पूर्व क्या हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, द्रव्य का गृह में सदुपयोग हो। द्रव्य का जहाँ दुरुपयोग होता है, वहाँ माता का अपमान होता है, **जहाँ द्रव्य का सदुपयोग होता है, वहाँ माता का मान होता है।** माता-पिता मानो वो प्रभु हैं, वो सर्वत्र प्रदान कर देते हैं। तो इसलिये आज का हमारा विचार ये क्या मानव को द्रव्य का सदुपयोग करना और देखो, द्रव्य का दुरुपयोग न करना, सदुपयोग करना, मानवीय दर्शन में रत्त रहना। राजा को अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाने के लिये, एकोकी धर्म, एकोकी विचार, मानवीयता को अपनाकर के राजा चलेंगे, तो राष्ट्र पुनः से पवित्र बन जायेगा। ये आज का वाक्य, अब मैं अपने वाक्यों को यहीं विराम दे रहा हूँ।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपना एक विचार दिया। इनके हृदय में राष्ट्रवाद के प्रति बड़ी विड़म्बना रहती है। परन्तु उनके यहाँ एक दाह है, विड़म्बयुक्त रहते हैं। विचार तो बड़ा सार्थक रहता है। विचारों में एक ही विचार मुझे बहुत प्रिय लगा, क्या राजा को धर्म और मानवीयता का निराकरण करना है और अपने को धर्म और मानवता की आभा को अपनाना है। एक ही वाक्य उन्होंने कहा – महाराजा अश्वपति की वार्त्ता को प्रगट करते हुये अपना विचार दिया जो मुझे बहुत प्रिय लग रहा है। परन्तु आज का विचार ये कि हम अपने में याज्ञिक बनें। **ऋषि-मुनियों का एक ही मन्तव्य रहा है क्या उन्होंने प्रत्येक वस्तु को याग से सम्पन्न किया है।** वाक्य को भी यागों से, मानवीयता को भी यागों से, चरित्र को भी याग से कटिबद्ध किया है। तो आज का विचार अब ये समाप्त होने जा रहा है।

आज के विचार उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुये, देव की महिमा का गुणगान गाते हुये उस परमपिता परमात्मा की महती को अपनाते हुये, इस सागर से पार हो जायें। ये आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः यमस्र्वागतम् आभ्याम् देवाः।
ओ३म् जनिता रथम् ब्रह्म वर्णागतम् देवाः वायु गताहा।
ओ३म् मनश्चमा रथम् आपाहाम्।

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्! आज्ञा।
पूज्यपाद-गुरुदेव–ओ३म् शान्तिः।

दिनाँक : 20 मार्च, 1986
समय : प्रातः 10 बजे
स्थान : चौधरी फेरू सिंह
ग्राम लूम, मेरठ

॥ ओ३म् ॥

त्रिविद्या

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। आज का वायुमण्डल, आधुनिक प्रवाह उसका उल्लास आत्मा को प्रेरित करता चला जा रहा है। जब मानव वेद मन्त्रों का प्रसारण करता है, तो हृदय में ऐसा प्रतीत होता है, जैसे परमपिता परमात्मा आज हमें कोई अमूल्य वस्तु प्रदान करते चले जा रहे हैं। क्योंकि वेद ज्ञान की जो प्रतिभा है, इसका वास्तव में सम्बन्ध, प्रायः आत्मा से होता है। परन्तु जब आत्मा का ज्ञान, आत्मा को पुनीत तरङ्गें मन के द्वारा और वेद मन्त्रों का जो ज्ञान है, परन्तु जब दोनों का तारतम्य एक हो जाता है, तो वेद ज्ञान और आस्था में कोई अन्तर्द्वन्द्व नहीं होता। यह जो आत्मा का अन्तर और आत्मा के और वेद ज्ञान के मध्य में जो अन्तर्द्वन्द्व होता है, परन्तु वह सीमा समाप्त हो जाती है। क्योंकि मानव का हृदय विभोर हो जाता है, मानव के हृदय में विशालता प्रविष्ट हो जाती है। तो मेरे प्यारे ऋषिवर! आज का वेद पाठ, हमारे अन्तःकरण को पवित्र बनाता चला जा रहा था।

वेद ज्ञान का रहस्य

आज हमें ऐसा प्रतीत हो रहा है, जैसे हम बहुत आनन्द में ही जीवन को पान करते चले जा रहे हैं, क्योंकि वेद से मानव को अनुपम देन प्राप्त होती है और वह देन क्या है, जैसे माता रात्रि, माता अहिल्या की गोद में जाने से मानव को, जीवन प्रदान होता है, जीवन प्राप्त होता है। इसी प्रकार जो मानव आत्मा को भोजन देने वाले होते हैं, आत्मा को भोजन नित्यप्रति

देते हैं, बेटा! उनका वेद ज्ञान से, आओ, अन्तरात्मा किसी काल में भी तृप्त नहीं होता, क्योंकि यह सदैव पिपासा में रहता है। क्योंकि ज्ञान अनुपम है, ज्ञान अनन्त है, अनन्त ज्ञान होने के नाते, परन्तु आत्मा में भी ज्ञान अनन्त है। परन्तु **हमारे यहाँ वेदों को ईश्वरीय ज्ञान माना है।** इसीलिये वेदों का ज्ञान इतना अनन्त है, आत्मा का ज्ञान, मुनिवरो! अन्त में नेति-नेति उच्चारण कर देता है। क्योंकि परमात्मा का ज्ञान अनन्त है। जैसे उसकी रचना अनन्त है, इसी प्रकार उसका ज्ञान भी अनन्त है।

आत्मा का भोजन

आज हम विचार-विनिमय करते चले जायें, कि मानव को वास्तव में वेद की गोद में चला जाना चाहिये। क्योंकि आत्मा हमारा ही, आत्मा ही मानव को ऊँचा बनाता है। आत्मा को भोजन देना हमारा सबका कर्त्तव्य हो जाता है। क्योंकि आत्मा को भोजन न देने वाला प्राणी बेटा! संसार में अपने कार्यों से शून्य रहता है। वास्तव में प्रातःकाल से मानव अपनी शैय्या को त्यागता है, सायँकाल तक कार्य ही करता रहता है उदर की पूर्ति करने का। क्या, वह जो अन्तरात्मा विराजमान है शरीर में, क्या बेटा! उसको तो भोजन प्राप्त नहीं होता, वह तो केवल शरीर की रक्षा करने के लिये होता है, शरीर की प्रायः रक्षा होती है, परन्तु यदि यह कहो, कि आत्मा इससे तृप्त हो गया, इससे आत्मा तृप्त नहीं होता। आत्मा तृप्त उस काल में होता है, जब आत्मा को भोजन दिया जाता है। जैसे शरीर को भोजन देने से शरीर तृप्त होता है, इसी प्रकार आत्मा को वेद ज्ञान का भोजन देने से, आत्मा सदैव प्रसन्न होता है।

आज हमें इस आत्मा के ऊपर बहुत चिन्तन करना है, प्रातःकाल की अमृतवेला में बेटा! ये पुनः समय प्राप्त हो रहा है कि वेद ज्ञान को ही उच्चारण करने का हमारा, यह कितना ऊँचा, महान् सौभाग्य है। परमात्मा की कितनी अनुपम देन है कि हम प्रातःकाल की अमृतवेला में, आज हम देखो, **आत्मा सूक्तों** का पठन-पाठन करते चले जा रहे थे। जहाँ मानव आत्मा के, शरीर

के भोजन के लिये सदैव प्रयत्नशील रहता है, नाना के साधन एकत्रित करता है, उसी प्रकार आत्मा को भी भोजन देने का भी प्रयास मानव को इससे कई गुणा करना चाहिये, कि मानव इस संसार में आ करके बेटा! अपने अन्तर्द्वन्द्व में न जाये। केवल वह सदैव प्रकाश में रमण करता रहे, जैसे हमारा आज का प्रथम वेद मन्त्र कहता चला जा रहा था **अग्ने आत्मा ब्रह्मे अस्ति** मानो यह जो अग्ने है, यह आत्मा है, वह अग्ने ही ब्रह्म है। क्योंकि बेटा! जिसके प्रकाश में हम सदैव रमण करते रहते हैं, उसी की क्रिया से हमारा जीवन सदैव क्रियाशील रहता है। हमें उस **परमपिता परमात्मा की आराधना, उपासना प्रातःकाल में करनी चाहिये।**

हमारे यहाँ बेटा! कुछ ऐसा माना है, परम्परा के आचार्यों के कथनानुसार कि हमारे यहाँ चार वेद मुख्य माने गये हैं। चारों वेदों के रचयिता हमारे यहाँ कुछ ऐसा माना जाता है, वायु, आदित्य, अङ्गिरा, अग्नि यह चार ऋषि हुये, परन्तु किन्हीं-किन्हीं ऋषियों का ऐसा विचार है, क्या इन चारों वेदों के जो रचयिता हैं, वह आदि ब्रह्मा हैं, ऐसा भी कहा जाता है। परन्तु मैं उन वाक्यों पर इतनी गम्भीरता में प्रातःकाल की पुनीत वेला में नहीं जाना चाहता हूँ। केवल उच्चारण करने का अभिप्रायः यह, कि वेद हमारे यहाँ तृतीय कहा जाता है। हमारे यहाँ वास्तव में वेद तीन ही माने गये हैं। क्योंकि तृतीय का अभिप्रायः यह है कि संसार में तीन प्रकार की विद्या, संसार में चतुर्थ विद्या नहीं है। केवल चतुर्थ विद्या होने का कारण है, जिसको हमारे यहाँ विज्ञान काण्ड भी कहते हैं। परन्तु उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि त्रिविद्या, हमारे दर्शनों में आता है, वेदों में भी भिन्न-भिन्न प्रकार के मन्त्र आते हैं, **त्रिवर्धा, प्रिवर्धन्त्री त्रिकलाप्रमस्ति सुप्रजा त्रिबर्धा प्रिवंधम आकान्ति त्रिमन्थना** वेद का आचार्य तो यह कहता है कि त्रि का ही मन्थन करना चाहिये, क्योंकि संसार यह त्रिवाद में रमण कर रहा है, क्योंकि मानव का जो शरीर है यह भी त्रिवाद में है। यह जो प्रकृति की जो रचना हमें प्रतीत हो रही है इसमें भी हमें त्रिवाद प्रतीत हो रहा है, और वेदों

में भी त्रिवाद ही प्रतीत होता है और राष्ट्रवाद में भी त्रिवाद ही प्रतीत होता है। परन्तु उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि त्रिवाद में यह संसार रमण कर रहा है, गुण भी संसार में तीन ही हैं, प्रतिभा भी संसार में तीन ही प्रकार की है। सत्य भी तीन ही प्रकार का है। मुनिवरो! देखो, इसको सब विचार-विनिमय करने की आवश्यकता है, ये सब आत्मा का भोजन है, इसको संग्रह किया जाये।

ज्ञान का स्वरूप

मेरे प्यारे ऋषिवर! मैं आज इस पुनीत वेला में उच्चारण करने क्या आया हूँ, कि ब्रह्म की रचना और ब्रह्म किसे कहते हैं? **ब्रह्म नाम पुनीत पवित्र विद्या को कहते हैं**..... किसी वस्तु को जानना और उसको जानकर यथाशक्ति और उसको जानने के पश्चात् उसके ऊपर मन्थन करना, यह उसका ज्ञान कहलाया जाता है। जैसे आज हम तारा मण्डल अथवा सूर्य को दृष्टिपात कर रहे हैं, हमें दृष्टिपात तो हो रहा है कि सूर्य है और नेत्रों का प्रकाशक है, मानो उसकी नाना प्रकार की किरणें भी संसार में ओत-प्रोत हो रही हैं, ये भी हमें प्रतीत है। परन्तु विचार-विनिमय यह करना है, कि सूर्य की कौन-कौन सी किरणें हैं, जो मानव को लाभप्रद होती हैं, मानव को उज्ज्वल बना देती है। अभिप्रायः, उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि हमारे यहाँ सूर्य को, सूर्य ही नहीं कहते, सूर्य को आदित्य भी कहते हैं, इन्द्र भी कहते हैं, और भी नाना इसके पर्यायवाची शब्द हैं, विष्णु, ब्रह्मा इत्यादि नामों से भी इसका वर्णन किया गया है। परन्तु वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि जैसे हमें ये दृष्टिपात आ रहा है कि यह सूर्य हमारा ज्ञान हो गया। परन्तु इसके ऊपर हम मन्थन करेंगे, विचार-विनिमय करेंगे, और उसी के ऊपर हमारा अध्ययन होगा, हम नाना प्रकार की किरणों के ऊपर हमारा अध्ययन करना। परन्तु जैसे हम विचारने रहते हैं, हमारा अध्ययन भी चलता रहता है। मेरे प्यारे महानन्द जी भी इसमें नाना प्रकार की वार्त्ता प्रकट किया करते हैं।

उन्होंने एक समय मुझे प्रकट कराते हुये कहा था, कि सूर्य को तो इन्द्र कहते हैं, मानो मुझे इनके आदेश, महर्षि वाल्मीकि शब्दार्थों में बहुत सुन्दर युक्ति है। बहुत सुन्दर उनका स्पष्टीकरण है, कि हमारे यहाँ महर्षि वाल्मीकि ने एक बड़ा सुन्दर अपनी लेखनीबद्ध करते हुये उन्होंने कहा था, कि हमारे यहाँ यह विज्ञान एकाम ब्रह्मे अस्ति सुप्रजा आज हमें यह जानना हो, कि हम जानना ..... आशा है। मेरे प्यारे! ऋषियों ने कहा, महर्षि वाल्मीकि ने इसका स्पष्टीकरण करते हुये ऐसा कहा है, कि **अहिल्या नाम हमारे यहाँ पृथ्वी को कहा है,** जैसा आज के वेद पाठ में भी अहिल्या शब्दों का प्रतिपादन किया जा रहा था। अहिल्या नाम पृथ्वी का है, **गौतम नाम चन्द्रमा का है,** और **इन्द्र नाम सूर्य को कहा गया है।** परन्तु हमारे यहाँ मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे उस समय प्रकट कराते हुये कहा था कि इन्द्र ने गौतम की पत्नी को छल लिया, और उसका हनन कर लिया, परन्तु गौतम ने उसको अपने जल से, स्नेह वस्त्र को अवरेह चन्द्रमा को अर्पित किया, परन्तु वास्तव में यह इस प्रकार नहीं है। यह केवल शब्दार्थ जो होता है, यह वाममार्गी शब्द है। क्योंकि वाममार्ग उसको कहते हैं, जो सीधा मार्ग न अपना करके, केवल उसके विपरीत मार्ग को अपना लेता है, उसकी वास्तविकता को जो गम्भीरता से उसके ऊपर चिन्तन नहीं होता। केवल यह उनका एक शब्द है बेटा! इसमें मुझे कोई दोष नहीं है, परन्तु जो वास्तविक शब्द है, उसको उच्चारण करने में मुझे किसी प्रकार का संकोच नहीं है।

आज मैं प्रातःकाल की पुनीत वेला में, वर्णन करने आ पहुँचा था, क्या अहिल्या नाम रात्रि को कहा गया है। क्योंकि यहाँ रात्रि वाचक शब्द आता है, रात्रि जो है, यह मानव को जीवन प्रदान करने वाली है, परन्तु रात्रि जो अहिल्या और इसके गर्भ प्रमाणी और गौतम नाम चन्द्रमा को कहा गया है। क्योंकि जब पूर्णिमा का चन्द्रमा होता है, किसी भी तिथि का चन्द्रमा हो, परन्तु यह चन्द्रमा जब आता है, रात्रि का जो अन्धकार है, अन्धकाररूपी जो रात्रि का शृङ्गार है वह चन्द्रमा की प्रतिभा में, उसकी किरणों में, उसकी कान्ति में उसका रात्रि का जो अपना स्वयं शृङ्गार है, उसमें रमण हो जाता

है। मुनिवरो! देखो, जैसे पतिव्रता देवकन्या अपने शृङ्गार को पति को अर्पित कर देती है इसी प्रकार हमारे यहाँ रात्रि को अहिल्या कहा जाता है। अहिल्या अपने आकार रूपी शृङ्गार को अपने पति चन्द्रमा को अर्पित कर देती है। चन्द्रमा को अर्पित करने के पश्चात, मुनिवरो! देखो, प्रातःकाल आता है, देवताजन बड़े दुःखित होते है, मानो देखो, अन्धकार ही नहीं जाता, मानो यह आश्वासन नहीं जाता, तो उस समय जब ऐसा देवताओं की पुकार होती है, तो कहते हैं कि इन्द्र आते हैं और इन्द्र ने आ करके यह विचारा कि अहिल्या तो बड़ी सुन्दर, इसे छलना चाहिये। मुनिवरो! देखो, इन्द्र की जो नाना प्रतिभा आती है, इन्द्र आकर अपने में अर्पित कर लेता है, और चन्द्रमा उस समय चिह्नवादी बन जाता है। परिणाम यह, जब वह नाना प्रकार का उसमें चिह्न अमृत हो जाता है, उसका परिणाम यह है कि चन्द्रमा मानो सूर्य के प्रकाश के आगे, बहुत सूक्ष्म हो जाता है, उसको कान्ति न होने के तुल्य हो जाती है, और वह जो रात्रि अहिल्या है, वह सूर्य के गर्भ में, सूर्य की किरणों में रमण हो जाती है। रमण हो जाने के नाते, परन्तु देखो, इसीलिये हमारे यहाँ अहिल्या गौतम का बड़ा सुन्दर सम्वाद आता है, मैं इसका विरोधी नहीं। क्योंकि हमारे यहाँ महर्षि गौतम हुये हैं, उनकी पत्नी का नाम भी अहिल्या है, परन्तु अहिल्या उनका नाम होने के नाते, इसका अभिप्रायः यह नहीं कि हमारी आलङ्कारिक वार्त्ता समाप्त हो जाती है। इसका यह अभिप्रायः नहीं है, अभिप्रायः केवल यह है कि आज हमें वास्तविक स्वरूप को जानना किसी भी वस्तु का, हमारे यहाँ गौतम के नाना पर्यायवाची शब्द हैं, जैसे गौतम नाम चन्द्रमा का है, इसी प्रकार गौतम नाम सूर्य का है, क्योंकि गौ नाम प्रकाश का है, देखो, गौ नाम प्रकाश का और तम नाम अन्धकार का है, इसीलिये परमात्मा जो संसार को प्रकाश में लाने वाला है, इसीलिये परमात्मा को गौतम कहा जाता है। मानो जब यह संसार की सुन्दर रचना होती है, क्योंकि अहिल्या के भी पर्यायवाची शब्द हैं, अहिल्या नाम प्रकृति का है। अहिल्या नाम माता को भी कहते हैं, अहिल्या नाम रात्रि का, अहिल्या नाम पृथ्वी का, अहिल्या नाम सूर्य की कान्ति को, सूर्य की किरणों को भी कहते हैं। हमारे

यहाँ नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द हैं, परन्तु वाक्य केवल इतना उच्चारण करना है कि अहिल्या नाम प्रकृति का है। जब यह प्रकृति अपने स्वरूप में होती है – संसार की रचना प्रायः होनी ही है, उस समय देखो, गौतम इस प्रकृति को, इस अहिल्या को अन्धकार में न ला करके, केवल क्रिया और प्रकाश में ला करके इसलिये परमात्मा भी अहिल्या का पति ही माना गया है। क्योंकि परमात्मा को यहाँ गौतम कहा गया है। क्योंकि वह अन्धकार से प्रकाश में लाने वाला है, तो केवल अभिप्रायः यह है कि जो अन्धकार से प्रकाश में लाता हो, उसी का नाम गौतम कहा गया है।

मेरे प्यारे ऋषिवर! मैं दूरी चला गया हूँ। वाक्य यह उच्चारण किया जा रहा था कि वेदों में तीन प्रकार की विद्या आती है। ज्ञान, कर्म, उपासना, मानो ज्ञान मैंने अभी-अभी उच्चारण किया, कि ज्ञान होना चाहिये। हमें वास्तविक स्वरूप का, **जिस मार्ग को हमें अपनाना है उसका हमें वास्तविक ज्ञान होना चाहिये।** आज हम अलङ्कारों को अपनाते हैं, आज हम यथार्थ मार्ग को अपनाते हैं तो उसका मार्ग वास्तविक दशा को जानना, यह हमारा सभी का कर्त्तव्यवाद होता है।

कर्म की मीमांसा

इसीलिये बेटा! आचार्यों ने कहा कि ज्ञान, कर्म, अब कर्म की मीमांसा आती है। मुनिवरो! देखो, जितना भी मानव कर्म करता है, प्रातःकाल से सायँकाल तक, उस कर्म में भी विचार होता है। कर्म भी तीन प्रकार के होते हैं, कुछ तमोगुणी होते हैं, कुछ रजोगुणी होते हैं, कुछ सतोगुणी होते हैं। और इन कर्मों में भी, कुछ ऐसे कर्म होते हैं जो रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण से भी उपराम कर्म होते हैं। मुनिवरो! देखो, वह कर्म रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण से उपराम होते हैं, जिनका अन्तःकरण में न रजोगुणी, न सतोगुणी, न तमोगुणी किसी प्रकार का संस्कार अन्तःकरण में उद्धृत नहीं होता। तो उन कर्मों को हमारे यहाँ बेटा! इन तीनों गुणों से उपराम स्वीकार किया गया है। तो ऐसे ही आज हमें विचारना है, मानो देखो, तमोगुणी जो कर्म हैं, वह जो अपनी

देखो प्रतिभा, अपने अभिमान को ले करके जो कर्म करता है, अभिमानता इसमें रहती है, मानो वह जो कर्म है सदैव रजोगुणी कर्म होता है। परन्तु जो प्रमाद, पाखण्ड वाला जो कर्म होता है, यह सदैव तमोगुणी होता है, और जो मानव केवल अपने कर्त्तव्यवाद की प्रतिभा को ले करके चलता है कि यह मेरा कर्त्तव्य है, परन्तु उस कर्त्तव्य की मीमांसा पर विचार-विनिमय करता है, वह जो कर्म है, वह जो कर्त्तव्य है, वह उसका सदैव सतोगुणी माना गया है।

देखो, कुछ कर्म इस प्रकार के हैं, जो इन तीनों गुणों से उपराम हैं, जैसे मानव कर्त्तव्यवाद के ऊपर ले जाता हुआ, कर्त्तव्यवाद भी तीन प्रकार के होते हैं। एक कर्त्तव्यवाद तो मानव के मस्तिष्क में एक मीमांसा होती है, उसकी मीमांसा उसके मस्तिष्क में होती है कि मेरा कर्त्तव्य है, परन्तु विचारना यह होता है कि वह कर्त्तव्य भी किस प्रकार का हो, यह कर्त्तव्य विधिवत् हो, अर्थात् विधि से शून्य होना चाहिये। परन्तु यहाँ आचार्यों ने कहा कि वह विधि से शून्य नहीं होना चाहिये, परन्तु देखो, विधि भी, वास्तव में गुणों के साथ में रमण कर जाती है। परन्तु कुछ ऐसे कर्म हैं, जैसे मानव कर्म करता है, और जानता है कि प्रभु! मेरा जो न्याय है, यह तेरे ऊपर है, परन्तु वह जो न्याय की वार्त्ता है, और उसके अन्तःकरण में उसका संस्कार नहीं होता, संस्कार न होने के कारण वह जो वाक्य है उसका, यह जो उसकी प्रतिभा है, यह जो उसका शब्द है, वह जो उसकी रचना है, उसके मस्तिष्क को, आत्मा के द्वारा, जो आत्मिक शब्द आया है, परन्तु आत्मा की वेदना जब परमात्मा को प्राप्त होती है, तो वो अन्तःकरण में उसका संस्कार विराजमान नहीं होता, और अन्तःकरण में उसका संस्कार विराजमान नहीं होता, तो उसका फल भी नहीं होता, परन्तु जब फल नहीं होता तो बेटा! उसका आवागमन भी नहीं होता। तो इसीलिये हमें प्रत्येक वाक्य बहुत ऊँचे स्तर पर ले जाना है, कि हमारा जो उद्देश्य है, हमारी जो वास्तविक मीमांसा है वह क्या है क्योंकि मानव के जीवन की जो मीमांसा है, वह बड़ी अलौकिक और बड़ी विचित्र मानी गई है। तो मैं आज अभी-अभी यह वाक्य उच्चारण करने जा रहा था कि हमें अपने जीवन को, अपनी मानवीय

प्रतिभा को उज्ज्वल बनाने के लिये, ज्ञान, कर्म और उपासना को अपनाना है। मानो ज्ञान, कर्म, उपासना इसका, आज हम कर्म के ऊपर कर्म की बहुत प्रकार की मीमांसा है, मैं उस कर्म को इतनी गम्भीरता में नहीं ले जाना चाहता हूँ, केवल इतना उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि आज हम यह विचार-विनिमय करने वाले बनें कि हम तीन प्रकार के ज्ञान को ले करके, तीन प्रकार की उपासना आदि बनें, कुछ कर्म इस प्रकार जो उपराम होते हैं।

उपासना

इसके पश्चात् उपासना आती है। उपासना किसे कहते हैं, उपासना वह होती है, जिस वस्तु को जैसा तुम स्वीकार करते हो, उस वस्तु का पूजन करना। मानो देखो, जैसे माता है, अब माता का पूजन हमें करना है, क्योंकि उसकी उपासना करनी है, उसने हमें जन्म दिया है। जननी है, उसने रक्षा की है, पालना की है। अब विचारना यह है, कि हमें उसके ऊपर हमारा भी कुछ ऋण है, हमें उसकी उपासना करनी है। परन्तु उपासना का अभिप्रायः यह नहीं, कि उसके चरणों को स्पर्श किया जाये, चरणों को भी स्पर्श करना चाहिये, परन्तु चरणों को स्पर्श करने से पूर्व, उस माता का जैसा ऋण है, वैसा उससे मुक्त हो जाने का नाम उपासना कही गई है। क्योंकि उपासना का अभिप्रायः यह है, जैसे परमपिता परमात्मा है, आज हम परमात्मा को स्वीकार करते हैं, परन्तु परमात्मा की प्रतिभा को जानने का भी हम सदैव प्रयास करते रहते हैं, और यह विचारते रहते हैं कि परमात्मा हमारा कल्याण भी करे। परमात्मा हमारे कल्याणमयी आनन्द को प्राप्त कराता चला जाये, यह भी हम सब स्वीकार करते हैं, इसके ऊपर हमारा कोई विरोध नहीं है, न इसमें हमारा कोई किसी प्रकार का विरोध रहता है। परन्तु विचारना यह कि परमात्मा को कोई स्वीकार करो या न करो, इससे भी स्वीकार नहीं, परन्तु जो हमारी उपासना है, उसको विचारना है, कि उपासना किसे कहते हैं? उपासना का अभिप्रायः यह है कि जिस उपासना से, जिस विभोर से हम तन्मय हो जाते हैं, उसका नाम उपासना है, एक उपासना तो यह होती है।

अब रहा यह कि हमें **जल की उपासना** करनी है, परन्तु जल का अभिप्रायः यह नहीं कि हम भुजों से उसकी उपासना करते रहें, उपासना का अभिप्रायः यह है कि उस जल को, उसको वास्तविक रूप में लाने का नाम उसकी उपासना है। जैसे अब जल है, जल से नाना प्रकार के कार्य होते हैं। हमारे यहाँ एक वाक्य आता है, कि **महात्मा भागीरथ** हुये हैं रघु परम्परा में, रघु प्रणाली में ऐसा कहा जाता है कि यह जो महात्मा भागीरथ थे, यह राजा सगर के आठवें पड़पौत्र कहलाते थे। यह रघु परम्परा में हुये हैं, और इनका अभिप्रायः यह था कि मुझे गङ्गा को शुद्ध रूप से बहाना है, इसको उज्ज्वल बनाना है, तो महात्मा भागीरथ ने वही किया। गंङ्गा को पर्वतों में से लाने का प्रयास और मानसरोवर से लाने का, कैलाश की कन्दराओं से लाने का, इसको कैलाश के गर्भ में से लाने का अभिप्रायः यह रहा, इसका सुचारू रूप से कार्य, वास्तव में वह अपना कार्य को पूर्ण तो कर नहीं सके, परन्तु इतना किया, कि इस जल से कृषि होनी चाहिये, अन्न उत्पन्न हो, उस अन्न से हमारा जीवन पनपेगा। तो उस जल की उपासना होती है, उस जल को सुन्दर रूप में लाना, उस जल का दुरुपयोग न करना, मानो जल को यथायोग्य उसको बरतों, बरतना, यह उसकी उपासना कहलायी जाती है।

इसी प्रकार आज, हमें **अग्नि की उपासना** करनी है, परन्तु अग्नि की उपासना करने का अभिप्रायः यही है कि आज हम अग्नि में यथाशक्ति अपना कार्य करें। हम उससे देखो, मेरी प्यारी मातायें अन्न तपाती हैं, उसको पान करती हैं, उसी प्रकार की अग्नि हमारे शरीर में भी ओत-प्रोत रहती है। उस अग्नि का हमें यथार्थ रूप धारण करना, यह उसकी उपासना है।

देखो, उपासना का अभिप्रायः यह है, कि हम आत्मा की उपासना करते हैं, अब **आत्मा की उपासना** करने का अभिप्रायः यह है कि आत्मा से हमें वेदना आती है, आत्मा कहती है कि यह कार्य पाप है, तो आत्मा का, जो अन्तःकरण की आत्मा की जो वेदना होती है, उसको स्वीकार करना यह आत्मा की उपासना कही गई है, इसको ब्रह्म उपासना भी कहते हैं, क्योंकि

ब्रह्म के और दोनों के सहकारिता के होने के नाते, एक वृक्ष पर दोनों होने के नाते, दोनों के गर्भ में से सुमति आती है, परन्तु इस सुमति को स्वीकार करना, इसका अपने चित्रण में लाना, बेटा! उसको हमारे यहाँ उपासना कहते हैं। आज हमें आत्मा की उपासना करना है, तो आत्मा से जो वाणी आती है, आत्मा से जो प्रसन्नता आती है, परन्तु उसको स्वीकार करना, उसको लाना, आत्मा का बेटा! सर्वश्रेष्ठ वही भोजन होता है। जिसको मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मैं इस वाक्य को अधिक नहीं उच्चारण करूँगा, केवल संक्षिप्त परिचय देने जा रहा हूँ।

वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम ज्ञान, कर्म, उपासना इन तीनों को जानते हुये चलें, क्योंकि यह तीनों ही हमारे जीवन के लिये सर्वस्व उपयोगी हैं, इनको जानना ही यह आत्मा के भोजन की सामग्री है। यज्ञशाला में देखो, होताजन, यजमान विराजमान जब होता है, तो यजमान जब सुन्दर आहुति देता है, विचारों को देता है और स्वाहा कह करके अग्निहोत्र करता है। उसकी जो विचारधारा है वह सुगन्धि को ले करके वायुमण्डल में ओत-प्रोत हो जाती है। इसी प्रकार जैसे वह ओत-प्रोत हो जाती है, और इसी प्रकार हमारे हृदय की जो वेदनायें हैं, हमारा जो आत्मा का भोजन है, यह जो अग्नि का भोजन नाना प्रकार की सामग्री है, इसी प्रकार विचारों का भोजन भी वही है। मुनिवरो! जैसे **अग्नि में दिया हुआ साकल्य, सूक्ष्म बन करके, वह मेघों तक जाता है संसार में, वातारण को सुन्दर बनाता है, इसी प्रकार हमारी आत्मा का जो भोजन है, आत्मा की जो सामग्री है, वह नाना प्रकार की वेद की ऋचायें कहलाती हैं। बेटा! वह जो भोजन है वह आत्मा में हुत किया जाता है, प्रहुत किया जाता है।**

माता की करूणा

हमारे यहाँ ऐसा कहा जाता है कि परमपिता परमात्मा ने जब यह जगत रचा था, तो सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया था। बेटा! सबसे

प्रथम देखो, हुत, प्रहुत और एक अन्न जो देखो, साझा अन्न है, सभी को पान करना, सबसे प्रथम उस अन्न को उत्पन्न किया, जिसमें सभी का भाग रहता है। आज प्रायः मानव यह विचारने लगे कि कृषक यह विचारता रहता है कि अन्न को उत्पन्न करता हूँ, मैं ही इसको पान करूँ तो यह असम्भव है, क्योंकि यह जो पृथ्वी माता है, यह सबको भाग दे देती है, क्योंकि वह वसुन्धरा है, प्राणी गर्भ में सब बसने के नाते, जो जिसके गर्भ में बसता है, वह माता जानती है, अपने प्यारे पुत्रों की करूणा को, उसके हृदय में एक करूणा होती है। एक महानता स्वतः होती है। जैसे पृथ्वी माता है, उसमें जितने प्रकार के प्राणी विचरण करते हैं, यह वसुन्धरा, उसको उसी प्रकार का अन्न यह प्रदान करती चली जाती है। तो हे माँ! तू कितनी पवित्र है, हे वसुन्धरा! तू कितनी माँ है, जो तेरे गर्भ में बसता है, तू उसको उसे प्रदान करती है। तेरे नाना प्रकार के पुत्र हैं, हिंसक प्राणी को, तू मानो मांस स्थापित करा देती है, और अन्न को भक्षण कराने वाले प्राणी को, तू अन्न देती है जो वनस्पति पान करने वाले हैं, नाना प्रकार का अन्न तेरे से उत्पन्न होता है, और तेरे गर्भ में यह जगत बस रहा है, उसी प्रकार का अन्न इस जगत को प्रदान करती चली जाती है।

प्रभु की विचित्रता

मेरे प्यारे ऋषिवर! यहाँ वसुन्धरा नाम परमात्मा को कहा गया है। यहाँ वसुन्धरा नाम पृथ्वी को तो कहते हैं, परन्तु वसुन्धरा नाम प्रभु को, प्रकृति को भी तो कहा जाता है क्योंकि उसी के गर्भ में नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर, नाना प्रकार के जगत वशीभूत रहते हैं। यह प्रभु की कैसी विचित्रता है, बेटा! इस पृथ्वी मण्डल पर सब पार्थिव प्राणी रहते हैं, सूर्य मण्डल पर अग्नि तत्त्व प्राणी रहते हैं, चन्द्र मण्डल में मानो शीतलता को सहन करने वाले प्राणी रहते हैं, बेटा! बृहस्पति मण्डल में वायु तत्त्व वाले प्राणी रहते हैं। यह प्रभु की कैसी विचित्रता है, बेटा! मैं तो इसको विचार नहीं पाता। मैं तो जब इस वन में चला जाता हूँ, मुझे तो ऐसा प्रतीत, हमें

तो ऐसा प्रतीत होता है, क्या हम प्रभु के आङ्गन में जाने के लिये तो उद्यत हैं, परन्तु यह ज्ञान भी होना चाहिये। इसीलिये वेद के ऋषियों ने कहा कि विचारों और उपासना करो, क्योंकि **मानव को जितना ज्ञान है, वह उपासना से प्राप्त होता है। उपासना से यथार्थ ज्ञान की प्रतिभा, मानव को प्राप्त हो जाती है।** इसीलिये आज मैं अधिक विलम्ब नहीं दूँगा इन शब्दों में, केवल उच्चारण करने का अभिप्रायः यह हमारा है कि हम विचार-विनिमय ही करते चले जायें कि वह जो माता वसुन्धरा है, वह हमें अपने में बसा रही है, और उसके सात प्रकार के अन्न की चर्चा चल रही थी, क्या, एक सबसे प्रथम जो सबका साझा अन्न है। एक अन्न पशुओं को दिया है, और मुनिवरो! देखो, वह भी सबका साझा अन्न है, अहा! एक तो साझा अन्न है, हुत, प्रहुत और तीन प्रकार के जो अन्न हैं, वे परमपिता परमात्मा ने अपने लिये रचे हैं। मुनिवरो! क्या देखो, जिसको हम मनम् प्रहा जिसको हम एक मनमयी में भोजन होता है, एक चक्षु में भोजन होता है और श्रोत्रों में भोजन होता है। मानो यह भी जो श्रोत्रों से भोजन किया जाता है यह और जो चक्षुओं से भोजन किया जाता है, और जो मन से किया जाता है, यह उस ब्रह्म ने अपने लिये रचे हैं। वह बेटा! जो भी हम इन तीनों से, श्रोत्रों से शब्द स्मरण करें, वह प्रभु के लिये, आत्मा के लिये, बेटा! जो हम चक्षुओं से दृष्टिपात करें, वह भी आत्मा के लिये, जो मन से चिन्तन करें, वह भी ब्रह्म के लिये, इसीलिये इन तीनों अन्न को भगवान ने अपने लिये रचा है। ब्रह्म ने अपने लिये रचा है, और यह जो और अन्न हैं, हुत, प्रहुत मानो हुत कहते हैं, आहुति देना, अग्नि में, यज्ञशाला में और प्रहुत जो ब्राह्मणजन हैं, उनकी सेवा करना, उनका आदर करना, उनकी शिक्षा ग्रहण करना। हुत, प्रहुत और जो अन्न साझा अन्न है, यह जो साझा अन्न है, यह सबका अन्न साझा है। इसमें पक्षी भी पान करते हैं, मानव भी पान करते हैं, अग्नि में भी जाता है, राजा को भी जाता है, यह सबका साझा अन्न होता है। एक अन्न होता है पशुओं के लिये क्योंकि जितना अन्नम् ब्रह्मे प्रभु की कैसी विचित्रता है, जैसा बेटा! जिसका उदर है उसी प्रकार

बेटा! वैसा ही भोजन दे देता है। यह कैसी प्रभु की विचित्रता है, विचार-विनिमय करते ही रहो, अनुसन्धान करते रहो। महर्षि कपिल जी ने तो यहाँ तक कहा, अनुसन्धानवेत्ताओं ने कि प्रभु! यदि तुझे अनुसन्धान कराना है, तो हमारी एक-एक सहस्त्रों की अवस्था, हमारी लाखों वर्षों की अवस्था हो इसके पश्चात् भी हम तेरे ज्ञान का अध्ययन अच्छी प्रकार नहीं कर सकेंगे। यहाँ तो मेरे प्यारे ऋषिवर! वाक्य यह कि प्रभु कैसा विचित्र है, कृषक से यह प्राप्त करो, कि हे कृषक! तेरा अन्न कितना है। बेटा! वह कितना अन्न है, मानव का अन्न, बहुत सूक्ष्म-सा और जो पशु का अन्न प्रबल है। इसी प्रकार उसका अन्न भी वही देखो, एक पौधे में, वही मनुष्य का आहार है, वही पक्षियों का आहार है, और वही पशु का आहार है। पशु का जैसा उदर है, वैसा प्रभु ने उसका भोजन, प्रभु ने उत्पन्न किया है। तो वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है, कि **प्रभु की प्रतिभा को जानना, यह हमारी ज्ञान, कर्म, उपासना मानी गई है।** तो आज हमें ज्ञान, कर्म, उपासना के ऊपर विचार-विनिमय करना चाहिये। क्योंकि इन तीनों का अन्न, प्रत्येक मानव जब यज्ञशाला में प्रदीप्त होता है तो तीन प्रकार के आचमन करता है, और आचमन करके यह कहता कि प्रभु! मेरा यह जो अमृतमयी जीवन है, यह पवित्र हो।

महर्षि अगस्त्य मुनि

आगे चल करके हमारे यहाँ बेटा! मुझे एक वार्त्ता स्मरण आती रहती है, मैंने पूर्व काल में भी उस वार्त्ता को प्रगट किया है। आज भी मुझे स्मरण आती चली आ रही है क्या हमारे यहाँ देखो, एक **महात्मा अगस्त्य** हुये हैं। बहुत परम्परा की वार्त्ता है, महर्षि अगस्त्य मुनि महाराज, जिनका जीवन सर्वोपरि और महान्, जिनकी माता का नाम रेभकेतु था। रेभकेतु माता यह चाहती थी कि मेरे गर्भ से जो बालक उत्पन्न हो, ऐसा हो और जो महान् हो और तीन प्रकार का आचमन भी करने वाला हो। तो माता को यह वेदना और जिज्ञासा जब गर्भ में जीवात्मा थी, जब ही से उसको महान् जिज्ञासा

बन गई, तो वह एकान्त में विराजमान हो करके, वेदों का, दर्शनों का अध्ययन करना। उसको यह पति जी ऋषिवर कहते हैं, पानकेतु जी कहा करते थे हे देवी! यह तुम क्या कर रही हो? परन्तु वह किसी की वार्त्ता स्वीकार नहीं करती थी। प्रभु के आङ्गन में सदैव रमण करना, तो परिणाम यह हुआ कि उनको माता के गर्भस्थल से देखो, बालक का जन्म हुआ, जिसका नामकरण संस्कार हुआ। नामकरण संस्कार कराने के लिये देवर्षि नारद मुनि आ पहुँचे। तो देवर्षि नारद मुनि ने जब नामकरण संस्कार किया, तो **वरुणकेतु** नाम उस बालक का नियुक्त किया। परन्तु जब वरुणकेतु नाम उस बालक का नियुक्त किया गया, तो वह अब उसके गुण, कर्म इसी प्रकार के बनने लगे, परन्तु जब आगे चल करके वह अध्ययनशील बन गया। तो ऋषि-मुनियों ने उसको तपस्या की प्रतिभा पान कराके, महर्षि प्राङ्गणी ऋषि महाराज ने उसको शिक्षा दी और उसी काल में देखो, उस बालक का नाम अगस्त्य नियुक्त कर दिया। अगस्त्य कहते हैं अधाम् ब्रहे अस्ति जो अगम्य, जिसका ज्ञान हो। मानो जिसका ज्ञान अगम्य हो और तीन प्रकार के ज्ञान में जो पारङ्गत हो, तो ऋषि का हृदय, इसी प्रकार मग्न रहता था।

मुझे एक वार्त्ता उनके सम्बन्ध में, मेरे प्यारे महानन्द जी प्रगट कराया करते हैं। ये कहा करते हैं कि अगस्त्य मुनि महाराज ने सर्वत्र समुद्र का पान कर लिया था तीन आचमनों में, और तीन आचमन में पान करके उसको खारी बना करके त्याग दिया, उपस्थ इन्द्रिय के द्वारा। ऐसा मुझे मेरे प्यारे! कहा करते हैं कि टटीरी के दोनों अण्डों को समुद्र ने अपनी तरङ्गों में रमण कर लिया। तो इनका वाक्य वास्तव में बड़ा गम्भीर और प्रिय है, अब मैं इसकी मीमांसा करूँ, तो बड़ी सुन्दर मुझे प्रतीत होती है। हमारे यहाँ कुछ ऐसा माना गया है कि समुद्रां ब्रह्मे अप्री सुप्रजा ऐसा आचार्य कहते हैं, ऐसा आता है कि जब यह टटीरी समुद्र के तट पर रहती थी, इसके दो पुत्र थे। दोनों पुत्र समुद्र ने अपनी तरङ्गों में जब रमण कर लिये, तो टटीरी को बड़ी वेदना हुई कि मेरा

परिवार नष्ट हो गया। मैं तो निर अगृत हो गई, मैं तो निःपुत्र हो गई, अब मुझे क्या करना चाहिये? उस समय उन्होंने अपने मन में यह सोचा कि समुद्र को शान्त करना चाहिये। अब पृथ्वी के कणों को लाना और समुद्र को शान्त करना उन्होंने विचारा। विचारने के पश्चात् जब यह वार्त्ता आई, तो कहते हैं कि अगस्त्य मुनि आ पहुँचे, अगस्त्य मुनि ने तीन आचमन किये, और सर्वत्र समुद्र को पान कर लिया और उसके पुत्रों को रक्षा हो गई।

तीन आचमन

वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि कौन अगस्त्य है? ऐसा कहते हैं कि ऋषियों ने कहा है कि भई! **टटीरी नाम आत्मा को कहा गया है।** टटीरी नाम आत्मा का है, और टटीरी के, **आत्मा के दो पुत्र हैं – मन और बुद्धि।** मन और बुद्धि यह दोनों और **समुद्र नाम इस संसार का है,** जिसमें **मान-अपमान की तरङ्गे** आती रहती हैं, मान-अपमान की तरङ्गों से यह मन और बुद्धि दोनों विचलित हो जाते हैं, दोनों इसमें रमण हो जाते हैं क्या मान और अपमान की तरङ्गों में कहीं दूरी चले जाते हैं, क्या तो कहीं समुद्र के तट पर आ जाते हैं, यह मानव के जीवन की, यह मान-अपमान की यह दशा हो जाती है। परन्तु जब संसार में मानो अब्रेत यह दोनों पुत्र रमण करने लगे, तो अन्तरात्मा दुःखित होता है। तो अन्तरात्मा कहता है कि मैं तो पितृवान थी, पुत्र बन गई हूँ, मुझे क्या करना चाहिये और आत्मा से वेदनायें उत्पन्न होती, तरङ्गें उत्पन्न होती हैं। जो ज्ञान है, वह आता है परन्तु वह भी चला जाता है, क्योंकि जब मन, बुद्धि कार्य नहीं करते, तो कहते हैं कि जब अन्त में इसको विवेक उत्पन्न हो जाता है। अब जब इसको विवेक उत्पन्न हुआ, क्योंकि **अगस्त्य नाम विवेक का है,** अगस्त्य नाम ऋषि को तो कहते ही हैं, परन्तु यहाँ अगस्त्य की मीमांसा विवेक को कहा गया है। अगस्त्य नाम विवेक का है। जब आत्मा से विवेक उत्पन्न होता है, ज्ञान की प्रतिभा आती है, उस समय मन और बुद्धि स्थिर हो जाते हैं। जाली मन, बुद्धि स्थिर हो जाते हैं जो सर्वत्र समुद्र है मानो देखो, इसके तीन आचमन

कर लिये जाते हैं। तीन आचमन क्या हैं? विचारना यह है कि जिस संसार सागर से पार हो सकते हैं, इस समुद्र से तर सकते हैं, ये तीन आचमन करने हैं। वे तीन आचमन क्या हैं? ज्ञान, कर्म और उपासना। ये तीन आचमन हैं जो तीन प्रकार की विद्या को मानव निगल जाता है, पान कर जाता है, वह बेटा! ये जो संसार रूपी समुद्र है, इससे यह मानव पार हो जाता है।

ब्रह्म की उपासना

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज हम प्रातःकाल की पुनीत वेला में आ पहुँचे हैं। वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि मानव को ज्ञान, कर्म और उपासना करनी चाहिये। ज्ञान और कर्म उपासना की गोद में चला जाना चाहिये। मेरे प्यारे ऋषिवर! कहते हैं कि अगस्त्य मुनि महाराज ने तीन आचमन किये, अगस्त्य नाम विवेक का है, यहाँ पर्यायवाची शब्दों में अगस्त्य नाम सूर्य का भी है, क्योंकि ग्रीष्म ऋतु में यह जल का पान कर लेता है। वर्षा ऋतु आती है, मानो जल को उगल लेता है मानो उसको वमन कर देता है, वमन करके मम ब्रही अस्ति मानो, धीमी-धीमी वृष्टि हो करके वनस्पति उत्पन्न हो जाती हैं। **अगस्त्य नाम परमपिता परमात्मा का है,** क्योंकि तीनों गुण उसके गर्भ में रहते हैं। तीन प्रकार की प्रतिभा उसके गर्भ में रहती है। इसी प्रकार हमारे यहाँ परमपिता परमात्मा को भी, आत्मा को भी अगस्त्य कहते हैं। क्योंकि आत्मा में ज्ञान कर्म और उपासना की, तीनों की प्रतिभा रहती है। वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हमें इनको जानना है, इनके ऊपर अध्ययन करना है, और नाना प्रकार के दम्भ, छल और पाखण्ड को त्यागना है, और उसको दूरी भगाना अपने मन से। मानव यह कहता है कि आड़म्बरी कौन होता है? पाखण्डी कौन होता है? वह होता है जो ज्ञान, कर्म, उपासना को अच्छी प्रकार नहीं जानता। वेद की प्रतिभा को जानता हुआ, केवल शाब्दिक जानता है, और वह दुराचार में लगा हुआ है, कहते हैं कि वह महान् पाखण्डी होता है। तो वेद का वाक्य क्या-क्या नहीं कहता, बेटा! एक-एक शब्द ऐसा अमूल्य है, इसके ऊपर अध्ययन करते ही रहो बेटा! शब्द नहीं,

परन्तु वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह, कि आज हम प्रभु की उपासना करते हुये, चिन्तन करते हुये, अपने मानव जीवन को उन्नत बनाते हुये चले जायें। वेदों में तीन प्रकार की विद्या आती है। ज्ञान, कर्म, उपासना और यह जो चतुर्थ काण्ड है, जिसको विज्ञान काण्ड कहते हैं यह इसके चुने हुये मन्त्र हैं इनमें भी मानो हमें विज्ञान में भी पहुँचना चाहिये। मैं इसका विरोधी नहीं हूँ। परन्तु ज्ञान, कर्म, उपासना के जानने से ही विज्ञानवेत्ता बनोंगे, वास्तविक विज्ञानवेत्ता भी नहीं बनोंगे।

अहा! आज का यह हमारा वाक्य समाप्त होने जा रहा है, वाक्यों का अभिप्रायः यह कि हम प्रभु की उपासना करते हुये, मन, कर्म, वचन से सुन्दर बनते चले जायें। हम जिसके प्रति जो वाक्य उच्चारण, उसमें यथार्थवाद होना चाहिये, मन से होना चाहिये, और कर्म से और वचन से पवित्र होना ही चाहिये। क्योंकि जब तक मानव के मन, कर्म, वचन पवित्र नहीं होंगे, तब तक मानव इस संसार सागर में ये तरङ्गें भ्रमण कर रही हैं, समुद्र की जो तरङ्गे हैं, मान-अपमान की तरङ्गे हैं, और ये जो तरङ्गें हैं, ये मानव को उस समय निगलती ही चली जाती हैं। यह है बेटा! आज का हमारा वाक्य, अब मुझे समय मिलेगा, तो शेष चर्चायें, वही वाक्यों की मीमांसा विस्तार से किसी काल में की जा सकती है।

आज के वाक्यों का अभिप्रायः यह कि हमें इस परमात्मा की गोद में प्रातःकाल में जाना चाहिये। जैसे सूर्य प्रकाशक है, ऐसे मानव को भी प्रकाश देना चाहिये, अपनी आत्मा के लिये सदैव प्रयत्नशील रहें। आत्मा से जिस प्राणी को, जो तरङ्गें आत्मा सें आती उनको स्वीकार करना, यह आत्मा की ब्रह्म की उपासना है, इसको करना हमारा कर्त्तव्य है। अध्ययन करना, चिन्तन करना, मनन करना, यह प्रत्येक मानव, प्रत्येक देवकन्याओं को करना चाहिये। आज का हमारा वाक्य समाप्त होने जा रहा है।

महर्षि महानन्द जी – धन्य हो, गुरुदेव! वाक्य तो बहुत ही सुन्दर, परन्तु समय बड़ा सूक्ष्म।

पूज्यपाद-गुरुदेव – हास्य ..... बेटा! कल समय मिलेगा, तो कल शेष चर्चायें विस्तार से कर सकेंगे। अब वेदों का पाठ होगा।

वेद पाठ .....

महर्षि महानन्द जी – अच्छा भगवन्! अब आज्ञा।

पूज्यपाद-गुरुदेव – आनन्द मङ्गलम भवतु।

दिनाँक : 13 मार्च, 1969

आवश्यक सूचना

सभी वार्षिक सदस्यों को सूचित किया जाता है कि जिन सदस्यों ने अभी तक वार्षिक सदस्यता की राशि जमा नहीं की है वह कृपया करके मनीआर्डर द्वारा समिति के कार्यालय में या प्रकाशन मंत्री को वार्षिक सदस्यता की राशि भेज दें जिससे कि पत्रिका निरंतर प्रेषित होती रहे।

सूचना

सभी आजीवन/वार्षिक सदस्यों को 'यौगिक प्रवचन' पत्रिका प्रत्येक मास की 10/11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी भी सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में अपने पोस्ट मैन से एक सप्ताह के समय में जानकारी करें और फिर भी न मिलने की स्थिति में अपने सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस में इस विषय में लिखित एक प्रार्थना-पत्र पोस्ट मास्टर साहब को दें जिससे कि पत्रिका न मिलने की खोज-बीन डाक विभाग द्वारा कराके आपकी पत्रिका आपको समय पर मिलनी प्रारम्भ हो जाए। कृपया प्रार्थना-पत्र की एक प्रति पर डाक विभाग द्वारा प्राप्ति के हस्ताक्षर व मोहर लगवाकर हमें भी भेज देवें जिससे कि इस विषय में यहाँ भी डाक विभाग को अवगत करा दिया जाए।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. प्रत्येक श्वास के साथ मस्तिष्क और हृदय, दोनों का मिलान करने वाला एक 'ओ३म्' रूपी धागा है।
2. जीवन मुक्त वह प्राणी होते हैं, जिनके पाप और पुण्य दोनों व्यापक नहीं होते।
3. व्यान प्राण का जो क्षेत्र है, वह कण्ठ से ऊपर का माना गया है।
4. आचार्यों ने कहा है सबसे बड़ा पाप वह प्राणी करता है, जो घृणा करता है।
5. मानव घृणा के द्वारा, कामना के द्वारा अपने मस्तिष्क को सङ्कुचित बना लेता है।
6. सुषुप्ति अवस्था में आत्मा का सम्बन्ध प्राण के द्वारा होता है।
7. स्वप्न अवस्था में आत्मा का सम्बन्ध मन के द्वारा होता है।
8. वेद के अनुसार मानव को अपना जीवन ऊँचा बनाना चाहिये।
9. वेद का जो प्रकाश है, यही प्रकाश मानव के अन्तःकरण को पवित्र बनाता है।
10. औषधियों का सम्बन्ध मन से होता है, प्राण से होता है।
11. मन और प्राण की रचना के आधार पर वनस्पतियों की रचना प्रायः होती रहती है।
12. मानवता का निर्माण उस काल में होगा जब ब्राह्मण ऊँचे तपस्वी, त्यागी पुरुष होंगे।
13. राजा के राष्ट्र का निर्माण केवल यज्ञ के द्वारा होता है।
14. आत्मा प्रकृति से सूक्ष्म है, और परमात्मा आत्मा से भी सूक्ष्म है।
15. प्रकृति सत् है, जीव सत् चित् और प्रभु सत् चित् आनन्द हैं।
16. जब तक वेद मन्त्र के साथ हृदय का मिलान नहीं होता तब तक वेद मन्त्र में आनन्द भी प्राप्त नहीं होता।
17. जब वाणी में सतोगुण प्रधान होता और मुखारबिन्दु से उत्पन्न होती है तो एक क्षण में पृथ्वी की 284 बार परिक्रमा कर जाती है।

।। ओ३म् ।।

निमन्त्रण पत्र

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

दशम् चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

सोमवार, दिनाँक 3 अक्टूबर 2022 से रविवार, दिनाँक 9 अक्टूबर 2022 तक
ग्राम दान्दूपुर, निकट बड़ा मवाना, जिला मेरठ

आत्मीय स्वजन,

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (संस्थापक गुरुकुल लाक्षागृह, वारणावत) की पावमानी शुभ प्रेरणा से योगऋषि स्वामी कर्मवीर जी महाराज के सानिध्य में गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी राष्ट्र कल्याण चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन **श्री शिव मन्दिर परिसर, ग्राम दान्दूपुर** में अत्यन्त धूमधाम से किया जा रहा है। आप सभी सपरिवार व मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं और यज्ञ में आहुति प्रदान करके पुण्य के भागी बनें।

यज्ञ के आचार्य एवम् उद्गाता श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह वारणावत, बागपत से होंगे।

–: कार्यक्रम :–

सोमवार, दिनाँक 3 अक्टूबर 2022 से शनिवार, दिनाँक 8 अक्टूबर तक

प्रातः 6:15 बजे से **6:30 बजे** ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या)
प्रातः 7:00 बजे से **10:15 बजे** देवयज्ञ (चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ)
प्रातः 10:15 बजे से **11:00 बजे** वेदोपदेश एवम् भजन
मध्यानः 12:30 बजे से **2:00 बजे** भजनोपदेश
सायंः 3:00 बजे से **5:30 बजे** तक देवयज्ञ
सायंः 5:30 बजे से **5:45 बजे** तक वेदोपदेश
रात्रिः 7:15 बजे से **10:00 बजे** तक भजनोपदेश

पूर्णाहुति रविवार, दिनांक 9 अक्टबर 2022

प्रातः 9:30 बजे से **11:00 बजे** तक पूर्णाहुति
प्रातः 11:30 बजे से आशीर्वाद, शान्तिपाठ एवम् प्रसाद

–: नोट :–

1. पूज्यपाद गुरुदेव का अमूल्य साहित्य पुस्तकें व सी.डी. के रूप में उपलब्ध रहेगा।
2. भोजन व आवास की व्यवस्था ग्राम समाज की ओर से निःशुल्क रहेगी।

आयोजक एवम् निवेदक समस्त ग्राम वासी, ग्राम दान्दूपुर, मवाना, जिला मेरठ

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	160.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	50.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	50.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेध-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	55.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	160.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	150.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
79.	मानव दर्शन	150.00
80.	यौगिक प्रवचन माला भाग-20	160.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, पेनड्राइव के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09897695391
2. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294, मोबाइल नं. 9810887207
3. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पञ्चशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
4. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
5. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)।
6. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। फोन नं. 0120-4202763, मो. नं. 9818079943
7. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
8. आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री, मं.न. 209 ग्रीन हाईटस A to Z रूड़की रोड़, मोदीपुरम्, मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09411823200
9. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पँचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
10. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
11. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
12. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
13. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
14. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
15. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्रीमति रेणु तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्री रत्न तुली	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती सुमन त्यागी, मुम्बई	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है कि मासिक सहयोग की राशि समय पर प्रेषित करने का सहयोग करें जिससे प्रकाशन निरन्तर ऊर्ध्वागति को प्राप्त होता रहें। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या आनन्द को चाहता है, सुख को चाहता है परन्तु यह सुख कहाँ प्राप्त होता है? सुख हमें उसी काल में मिलता है जब हम सुख स्वरूप प्रभु को जान लेते हैं, ज्ञानमय आनन्द को जान लेते हैं, जिस ज्ञान-विज्ञान की महिमा को गाते हुए हमारे ऋषि-मुनियों ने भिन्न-भिन्न रूपों में अनेक अलङ्कारों में उस परमात्मा को अङ्कित किया। आज हमें परमपिता परमात्मा को अपने हृदय में अङ्कित कर लेना है, उस परमात्मन् इन्द्र को कल्याणकारी जान करके अपने मानवत्व को पवित्र बना लेना है।

हे परमात्मन्! तू कल्याण कर हमें ज्ञान और विज्ञान के शिखर पर ले जा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 50 : अंक : 591
सितम्बर 2022

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2022-2023
Customer I.D. – 3000019591
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-9-2022
Published on 5th day of the same month

वर्ष 50 : अंक : 591
सितम्बर 2022

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2022-2023
Customer I.D. – 3000019591
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-9-2022
Published on 5th day of the same month